ISSN No. 2394-9996

रेखा मैत्र के पद्य साहित्य में व्यक्त जीवन दर्शन

प्रा. डॉ. द्वारका गिते-मुंडे
कला महाविद्यालय, नांदुर (घाट)
ता. केज. जि. बीड (महाराष्ट्र)

समकालीन हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों का योगदान बहुमूल्य रहा है। साहित्य की लगभग सभी विधाओं में उन्होंने अपनी लेखनी चलायी है। अपने स्व के प्रति सजग होकर अन्याय- अत्याचार के खिलाफ उन्होंने आवाज उठायी है। अपने कार्य और कर्तृत्व से अपना स्त्रीत्व उन्होंने सिद्ध किया है। परिणामस्वरूप स्त्री विमर्श की एक नयी विधा ने जन्म लिया है। स्त्री विमर्श की साहित्यकारों में महिलाओं की एक लंबी कतार नजर आती है। उनमें किर्ती चौधरी, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, राजी सेठ, सुनीता जैन, अर्चना वर्मा, रंजना जायस्वाल, रेखा मैत्र आदी कई हस्तियों का समावेश होता है। इस आलेख में रेखा मैत्र के पद्य साहित्य में चित्रित जीवन दर्शन को विवेचित करने का प्रयास किया है। मैत्रजीने पद्य साहित्य में अपनी रूची रखते हुए पलों की परछाईयाँ रिश्तों की पगडंडियाँ, मोहब्बत के सिक्के, यादों का इंद्रधनुष्य सन 2013, बेशर्म के फूल, ढाइ आखेर, मन की गली, उस पार आदी साहित्य कृतियों का सृजन किया है।

उत्तर प्रदेश के बनारस में जनमी रेखाजीने शालेय शिक्षा बनारस से प्राप्त की और सागर विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. किया। मुम्बई विश्वविद्यालय में टीचर्स ट्रेनिंग का डिपलोमा भी उन्होंने किया है। केंद्रिय हिन्दी संस्थान, आगरा में प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के विशेष कार्यक्रम में मैत्रजी का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। मध्यप्रदेश में आयोजित `अमरिकी पीस कोर` के प्रशिक्षण कार्यक्रम में अमरिकी स्वयंसेवकों को हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण देने का महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने किया है। राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय, भारत सरकार के मुम्बई स्थित हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत विभिन्न केंद्रिय कार्यालयों के अधिकारी, कर्मचारीयों को भी हिंदी भाषा का प्रशिक्षण उन्होंने दिया है। विदेश जाने के बाद भी रेखाजीने अपना हिंदी के प्रति अपनेपन का भाव बरकरार रखा। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अमरिका जाने के बाद भी अपना लेखन कार्ये जारी रखा। अमरिका स्थित `गवर्नेंस स्टेट युनिवसिर्टी` के ट्रेनिंग कोर्स करके वहाँ पर अध्ययन कार्ये किया।

`उन्मेष` इस साहित्यीक संस्था से जुड़कर हिन्दी भाषा के विकास में अपना येागदान देती रही।

रेखा मैत्र का पहला काव्यसंग्रह `पलों की परछाईयाँ` सन 1998 में वाणी प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस काव्य संग्रह की रचनाएँ रेखाजी के अनुसार स्वांत सुखाय रची गयी है। अपने अनुभूतियों के सहारे इश्क और मुश्क की कोमल भावतरंगों का अविष्कार उन्होंने इन रचनाओं में किया है। उनका जीवन की तरफ देखने का नजरिया सहज सुंदर है। जीवन की क्षणभंगूरता, सुख-दु:ख की अनुभूति उन्होंने इसमें व्यक्त की है। जीवन सुख-दु:ख से भरा हुआ है। इसलिए केवल सुख के पीछे दौड़ना नहीं है। दु:ख का धीरज से सामना करके जो मिला है उसमें घुलमिल जाओ, अपनी पहचान बनाओ। रास्ता कठिन होगा पर कामयाबी जरूर मिलती है। रेखाजी `क्षणिकाएँ` इस कविता में लिखती है---

``छोटे छोटे ढेरों सुख है जिन्दगी में
उन्हें जमा करके एक बढ़ा-सा ढेर बनाओ कभी
जैसे बच्चे सूखे पत्ते, या बर्फ का पहाड़ बनाते,
उस पर फिसलते खुश होते है।
एक बडा - सा सुख पकड़ने की कोशिश में
ये छोटे-छोटे सुख के टुकडे हाथ से फिसल जाते है न?`` पृष्ठ 20

जिन्दगी में विश्वास को महत्वपूर्ण माननेवाली रेखाजी पाठकों को `विश्वास` इस कविता में कहती है,

``उसे खोना अपने अस्तित्व को खोना है।``पृ.24

विश्वसनीयता हमारी पहचान है। हमारे चरित्र का, हमारे जीवन का सर्वोत्तम गुण है। इसलिए यह विश्वसनीयता वृद्धिंगत होनी चाहिए। एक जगह पर क. ला. मिश्र प्रभाकरजीने लिखा है, `विश्वसनीयता हमारे जीवन का कोई आवरण नहीं, आचरण है। हमें सुख हो या दुख, हम बढ़ या मिट जाये, दूसरों का , परिवारवालों का, पडोसियों का, देशवासियों का और संसार के समस्त नागरिकों का हमारे प्रति जो सहज विश्वास है, हम उसे खण्ड़ित न होने देंगे; हमारा यह निर्णय ही हमारी विश्वसनीयता का प्राण है। वह कोई अभिनय नहीं है कि हम उसे अभ्यास से प्रदिर्शत कर सके। वह हमारे जीवन का दीपक है, जो कागजों और दीवारों पर चित्रित होकर नहीं; स्वयं जलकर ही रोशनी देता है।` इमानदारी से आचरण करते हुए जिन्दगी में खोने की नहीं कुछ नया पाने की बात होनी चाहिए। आज मनुष्य की जिन्दगी एक घुड़दौड बन गयी है और इस घुड़दौड में तेज रफ्तार ही उसका मकसद बन रहा है। किसी को किसी की तरफ ध्यान देने को समय नहीं मिल रहा है। परिणामस्वरूप रिश्ते-नातों में बदलाव आ रहा है। पारिवारीक

विघटन जैसी कई समस्याएँ निर्माण हो गई है। रेखाजी `मकसद` इस कविता में कहती है,

``दौड एक मंजिल है
धुँधलाई-सी नजर
धूल के अम्बार से भरी
मुट्ठी भर तालियों की गूँज
और
एक बेहिसाब थकन !`` पृ.32

दूसरी एक कविता `दस्तक दर्द की` इस कविता में कवयित्रीने दु:ख-दर्द को कमबख्त कहा है। `दर्द की औकात क्या है? एक बिस्तर सा हर रात बिछता है।` दु:ख - दर्द का धीरज से सामना करते हुए उसे पास न आने देना ही बेहत्तर है। उसे उछाल फेको और जीवन में नित नये की शुरूवात करो। क्योंकि दर्द भरा जीवन सेहत भी बिगाड़ देता है। `समीकरण सुख का` इस कविता में रेखाजी पाठकों को सचेत करती है। अपनी जरूरते सीमित रखना, औरों से ज्यादा उम्मीद और अपेक्षा मत रखना। क्योंकि जब हम बेवजह अपेक्षा रखते है और अपेक्षाभंग होने से जो पश्चाताप व्यक्ति को भुगतना पड़ता है वह बहुतही दर्दभरा होता है। इसलिए `सम्बन्धों` के समीकरण से यदि अपेक्षाओं को निकाल दें, सुख का समीकरण निर्मित होता है तब।` ऐसा कवि का मानना है। अक्सर हम यही सोचते रहते है, जो हमारे पास नहीं है उसे पाने की तिव्रता मन में होती है और यही मन की तिव्रता दु:ख का कारण होती है। हम दुख को आयात करते है, उसे अपेक्षाओं से जोडते है। इसमें हम कभी सफल होते है तो कई बार विफल होते है। जब विफलता नसीब आती है तो बडा दु:ख दर्द सहना पड़ता है। इसलिए बेहत्तर यही है कि, जो मिला है उसमें संतुष्ट रहे।

रेखाजी का दूसरा काव्यसंग्रह `रिश्तों की पगडंडियाँ` जो सन 2004 में प्रकाशित हुआ है। इस काव्यसंग्रह की रचनाएँ जितनी सरल है उतनी मुश्किल भी है। सरल इसलिए की उनकी उपमाएँ रोजमर्रा की जिन्दगी से उठायी गयी है और मुश्किल इसलिए कि, रोजमर्रा की मामूलि सी बात के पीछे वो कोई न कोई जिंदगी का बड़ा असरात (रहस्य) खोल देती है।`खुशी दुख` कविता में रेखाजीने खुशी यानी सुख को नन्हें-मुन्हें पंछी कहा है। जो जिन्दगी में हमेशा आते है पर इन खुशियों के पंछी को पकड़कर दिल के पिंजड़े में बंद करना और जीवन सुखमय बनाना सबके नसीब नहीं होता और दुखों के पंछी परकटे परिन्दों की भांति सवार होते है और ये दुख के पंछी कब उड़ जाएँगे इसका इंतजार करना पड़ता है।

जिंदगी में अनुभव एक महान शिक्षक है। अनुभव के बल पर ही व्यक्ति अपने आस-पास के स्थिती का अंदाज लेता है। पर कभी कभी ऐसा होता है कि, जीवन में उपलब्धियों के नाम पर हासिल कुछ नहीं होता और समय बेकार ही कट जाता है। वक्त की व्यर्थता का एहसास हमें बेचैन करता है। पर कोई बात नहीं। कवयित्री `अनुभव` इस कविता में लिखती है:-

जीवन को पास से देखने का
अनुभव तो हुआ है।
यही तो सीढ़ी है
जिन्दगी को पकड़ पाने की!` पृ.89

सुंदर फूलों की तरह यह जिंदगी भी खुबसुरत है, खुशबूदार है। जिंदगी में आनेवाले खुबसुरत पलों के सुन्दर फुलों को जीवन के धागे में पिरों डालों और अपना जीवन खुशबूदार उपवन की तरह बनाओ क्योंकि दुख दर्द से आराम पाने के लिए यही बेहत्तर है। रेखाजी लिखती है:-

` उन फूलों की सुगन्ध से
तन - मन और आत्मा को सुवासित करो।
चाहो तो कल्पना के सोनपंखी रंगों से
आकशी मन पर खुबसुरत चित्र बनाओ। पृ 91

`आहत पल` इस कविता में रेखाजीने अपने हाथ से छुट गये सुख के नन्हें पलों के प्रति अपना दु:ख प्रकट किया है। इन सुखद पलों के साथ जो नाइन्साफी हुई है उनसे वह क्षमा चाहती है। और आनेवाले सुखद पलों के साथ मोहब्बत से पेश आने की, उन पलों को अपने जीवन में स्थान देने की बात करती है। क्योंकि कविने अब उन पलों के साथ दोस्ती जो कर डाली है।

`मोहब्बत के सिक्के` सन 2008 में प्रकाशित इस काव्यसंग्रह में रेखाजी ने प्रेम के लिए सिक्कों का बिम्ब चुना है। `सूनेपन के, रिक्तता के मानों खाली खजानों की छवियाँ भी इन कविताओं में रेखांकित हुई है। एक हल्की सी अवसाद की छाया जो प्रेम में हरदम महसूस होती है चाहे दिल का खजाना भरा हो या खाली।` `मोहब्बत के सिक्के` इस कविता में कवयित्री लिखती है:-

बेशुमार सिक्के है
मेरे पास मुहब्बतों के
होता है मनमिजाज
लुटा देती हूँ तब
अपने ही आसपास` पृ 11

जीवन को अजब भूलभूलैया माननेवाली रेखाजी `भुलभूलैया` इस कविता में कहती है-

``अजब भुलभूलैया सा है ये जीवन
जब हम बंजारे होते है
तो सुस्ताने को बेताब होते है
और जो रूके हुए होते है
तो चलने की जल्दी होती है
कहीं भी तो चैन नहीं
इस भुलभूलैया भरी जिन्दगी की।`` पृ 75

इस तरह रेख मैत्रने अपनी कविताओं में जीवन की क्षणभंगूरता, जिन्दगी में तेज रफ्तार से हो रही भागदौड, सुख-दुख का द्वंद्व, विश्वास का महत्व, अनुभव की गहराई और भूलभूलैया - सा जीवन दर्शन चित्रित किया है।

संदर्भ सूची:-

1) पलों की परछाईयाँ - रेखा मैत्र
2) रिश्तों की पगडंडियाँ - रेखा मैत्र
3) मोहब्बत के सिक्के - रेखा मैत्र
4) जिन्दगी मुस्करयी - क.ला. मिश्र प्रभाकर

☆☆☆